Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan

बहुविकल्पी प्रश्न

1. लैटेराइट मृदा किस फसल के लिए उपयुक्त नहीं होती है?

(अ) गेहूँ (ब) कॉफी
(स) चाय (द) काजू

2. भारत के मैदानी क्षेत्र का क्षेत्रफल है-

(अ) 27 प्रतिशत (ब) 43 प्रतिशत
(स) 30 प्रतिशत (द) 46 प्रतिशत

3. काली मृदा निम्नलिखित में से किस खेती के लिए उचित समझी जाती है?

(अ) गेहूँ (ब) ज्वार
(स) बाजरा (द) कपास

4. ऐसे संसाधन जिन्हें उपलब्ध तकनीकी ज्ञान की सहायता से प्रयोग में लाया जा सकता है, परंतु इनका उपयोग कभी प्रारंभ नही हुआ है, कहलाते हैं-

(अ) संचित कोष (ब) व्यक्तिगत संसाधन
(स) विकसित संसाधन (द) भंडार

5. सड़के व नहरें किस प्रकार के संसाधनों के अंतर्गत आते हैं?

(अ) सामुदायिक स्वामित्व वाले संसाधन (ब) व्यक्तिगत संसाधन
(स) विकसित संसाधन (द) राष्ट्रीय संसाधन

6. ज्वारीय ऊर्जा किस प्रकार का संसाधन है?

(अ) मानव निर्मित (ब) जैव
(स) अजैव (द) पुनः पूर्ति योग्य

7. जलोढ़ मिट्टी को किन दो भागों में विभाजित किया जाता है-

(अ) इनमें से कोई नहीं (ब) बाँगर और खादर
(स) काली और पीली (द) उपजाऊ और अनुपजाऊ

8. निम्नलिखित में से कौन-सा परम्परागत संसाधन है--

(अ) पवन ऊर्जा (ब) सौर ऊर्जा
(स) ज्वारीय ऊर्जा (द) प्राकृतिक गैस

9. कौन-सी मृदा सबसे अधिक क्षेत्र में पाई जाने वाली भारत की अति महत्त्वपूर्ण मृदा है?

(अ) लेटराइट मृदा (ब) लाल मृदा
(स) जलोढ़ मृदा (द) काली मृदा

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहां चाहें, जैसे चाहें।
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

10. **यदि फ्रांस को छींक आती है तो शेष यूरोप को ठंड लग जाती है। यह किसने कहा?**

(अ) मेत्सिनी
(ब) कूवर
(स) मेटरनिख
(द) गैरीबाल्डी

रिक्त स्थान

11. भूमि एक ____________ साधन है।

12. ज्वारीय ऊर्जा एक ____________ संसाधन है।

सत्य/असत्य

13. संसाधनों के अंधारुंध शोषण से वैश्विक पारिस्थितिक संकट पैदा हो गया है।

14. काली मृदा कपास उगाने के लिये एक मृदा है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. पृथ्वी सम्मेलन 1992 का मुख्य उद्देश्य क्या था? .

16. मरूस्थलीय मृदा की दो विशेषताएँ बताइए?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. मृदा अपरदन से आप क्या समझते हैं?

18. एजेंडा 21 क्या है ?

निबंधात्मक प्रश्न

19. भू-क्षरण क्या है? भू-क्षरण को रोकने के उपायों का वर्णन कीजिए।

20. मृदा अपरदन से क्या अभिप्राय है? मृदा अपरदन के लिए उत्तरदायी कारणों का वर्णन कीजिए।

HOTS

21. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

काली मृदा - इन मृदाओं का रंग काला होता है और इन्हे 'रेगर' मृदाएँ भी कहा जाता है। काली मृदा कपास की खेती के लिए उचित समझी जाती है और काली कपास मृदा के नाम से भी जाना जाता है। यह माना जाता है कि जलवायु और जनक शैलों ने काली मृदा के बनने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इस प्रकार की मृदाएँ दक्कन पठार (बेसाल्ट) क्षेत्र के उत्तर पश्चिमी भागों में पाई जाती हैं और लावा जनक शैलों से बनी है। ये मृदाएँ महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, मालवा, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पठार पर पाई जाती हैं और दक्षिण पूर्वी दिशा में गोदावरी और कृष्णा नदियों की घाटियों तक फैली हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
VIDEO COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

काली मृदा बहुत महीन कणों अर्थात् मृत्तिका से बनी है। इसकी नमी धारण करने की क्षमता बहुत होती है। इसके अलावा ये मृदाएँ कैल्शियम कार्बोनेट, मैगनीशियम, पोटाश और चूने जैसे पौष्टिक तत्त्वों से परिपूर्ण होती हैं। परंतु इनमें फास्फोरस की मात्रा कम होती है। गर्म और शुष्क मौसम में इन मृदाओं में गहरी दरारें पड़ जाती हैं जिससे इनमें अच्छी तरह वायु मिश्रण हो जाता है। गीली होने पर ये मृदाएँ चिपचिपी हो जाती हैं और इनको जोतना मुश्किल होता है। इसलिए, इसकी जुताई मानसून प्रारंभ होने की पहली बौछार से ही शुरू कर दी जाती है।

i. काली मृदा को किस अन्य नाम से जाना जाता है?

(अ) उपजाऊ मृदा (ब) रेगर मृदा

(स) रेतीली मृदा (द) कंकड़ वाली मृदा

ii. काली मृदा निम्नलिखित में से किस राज्य में पाई जाती है?

(अ) हरियाणा (ब) उत्तर प्रदेश

(स) मध्य प्रदेश (द) पंजाब

iii. काली मृदा का निर्माण कैसे होता है?

(अ) काली मृदा रेत से बनी है।

(ब) काली मृदा बहुत महीन कणों अर्थात् मृत्तिका से बनी है।

(स) इनमें से कोई नहीं।

(द) काली मृदा उपजाऊ मिट्टी से बनी है।

iv. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता काली मृदा की नहीं है?

(अ) ये मृदाएँ कैल्शियम कार्बोनेट और चूने से परिपूर्ण होती हैं।

(ब) इसकी नमी धारण करने की क्षमता बहुत होती है।

(स) इनमें फास्फोरस की मात्रा अत्यधिक होती है।

(द) गर्म और शुष्क मौसम में इन मृदाओं में गहरी दरारें पड़ जाती हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

Under CSR Support by
ipca | Foundation
missiongyan

1. **(अ)**
लैटेराइट मृदा गेहूँ की फसल के लिए उपयुक्त नहीं होती है। लैटराइट मृदा चाय, कॉफी, काजू आदि फसलों के लिए उपयोगी है, क्योंकि यह मिट्टी अम्लीय होती है।
2. **(द)** 46 प्रतिशत
3. **(द)** कपास
4. **(अ)**
संचित कोष यह संसाधन भविष्य की पूँजी है। जैसे- नदी का जल भविष्य में जलविद्युत को उत्पन्न करने में प्रयोग किया जा सकता है। ऐसे संसाधन वन में या बाँधों में जल के रूप में संचित है।
5. **(द)**
सड़के व नहरें, राष्ट्रीय संसाधनों के अंतर्गत आते हैं।
राष्ट्रीय संसाधन - ग्लोब पर स्थित किसी भी देश की सीमाओं में विद्यमान सम्पदाओं को राष्ट्रीय संसाधन कहते हैं।
6. **(द)**
ज्वारीय ऊर्जा एक पुनः पूर्ति योग्य संसाधन है। जिसे नवीकरणीय संसाधन भी कहा जाता हैं। ज्वारीय शक्ति का अभी भी बहुत कम उपयोग आरम्भ हो पाया है किन्तु इसमें भविष्य के लिये अपार ऊर्जा प्रदान करने की क्षमता निहित है।
7. **(ब)** बाँगर और खादर
8. **(द)** प्राकृतिक गैस
9. **(स)**
जलोढ़ मृदा भारत के सबसे विस्तृत क्षेत्र में पाई जाती है और भारत के लिए अति महत्त्वपूर्ण भी मानी जाती है सभी मिट्टियों में सर्वाधिक उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी है।
10. **(स)** मेटरनिख
11. प्राकृतिक
12. नवीकरण
13. सत्य
14. असत्य
15. **पृथ्वी सम्मेलन 1992 का मुख्य उद्देश्य,**
    - पर्यावरण संरक्षण तथा
    - सामाजिक आर्थिक विकास की समस्याओं का हल ढूँढना।
16. **मरूस्थलीय मृदा की दो विशेषताएँ :-**
    1. रंग लाल और भूरा
    2. रेतीली और लवणीय
17. मृदा के कटाव और उसके बहाव की प्रक्रिया को मृदा अपरदन कहा जाता है। अर्थात मृदा अपरदन का आशय मिट्टी के विनाश से है। वनस्पतिविहीन नरम मृदा पर अपरदन कि प्रक्रिया अधिक तीव्र होती है। जिसके कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम होती जा रही है।
18. **एजेंडा 21 के प्रमुख बिंदु निम्न थे:**
    1. पर्यावरण एवं विकास के मध्य संबंध के मुद्दों को समझा जाए.
    2. ऊर्जा का अधिक कुशल तरीके से प्रयोग किया जाए.
    3. किसान भाइयों को पर्यावरण संबंधी जानकारी दी जाए.
    4. प्रदूषण फैलाने वालों पर भारी अर्थदंड लगाया जाए.
    5. इस दृष्टिकोण से राष्ट्रीय योजनाएं बनाई एवं लागू की जाए।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
VIDEO COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

19. विभिन्न प्राकृतिक एवं मानवीय प्रक्रियाओं के माध्यम से धीरे-धीरे कृषि योग्य भूमि का विनाश अथवा नष्ट हो जाना भू-क्षरण कहलाता है।

भू-क्षरण को निम्नलिखित उपायों द्वारा रोका जा सकता है-

i. वनों की अत्यधिक कटाई को रोकना चाहिए और साथ ही नए वन क्षेत्रों का विकास करना चाहिए।

ii. उद्योगों के अंधाधुंध विस्तार को रोकना चाहिए तथा उनसे उत्पन्न होने वाले कूड़े-कचरे को नियंत्रित करना चाहिए।

iii. मरूस्थलीय क्षेत्रों में खेतों के चारों तरफ झाड़ियाँ उगाकर या फिर पेड़ लगाकर प्रवाहित हवा से होने वाले भू-अपरदन को रोकना चाहिए।

iv. पहाड़ी ढलानों पर तेज प्रवाहित जल को काबू में करने के लिए पेड़ों से युक्त सीढ़ीदार खेत बनाना चाहिए।

v. बाढ़ को समस्या उत्पन्न करने वाली नदियों पर बाँध बनाना चाहिए।

vi. पशुओ की चराई को नियंत्रित करना।

vii. फसलों की अदला-बदली करके भू-क्षरण को रोका जा सकता है। क्योंकि हर वर्ष एक ही स्थान पर फसल उगने से मिट्टी के पौष्टिक तत्व नष्ट हो जाते है, जिससे मृदा अपरदित होती है।

20. **मिट्टी के कटाव अथवा मृदा अपरदन का अर्थ**

मिट्टी के कटाव का अर्थ है, भूमि की उर्वरा शक्ति का नष्ट होना। दूसरे शब्दों में, मिट्टी की ऊपरी परत के कोमल तथा उपजाऊ कणों को प्राकृतिक कारकों (जल, नदी, वर्षा तथा वायु) या प्रक्रमों द्वारा एक स्थान से हटाया जाना ही भूमि का कटाव या मृदा अपरदन कहलाता है। यह कटाव अत्यधिक उपजाऊ भूमि को शीघ्र ही बंजर बना देता है। भारत में लगभग एक-चौथाई कृषि-भूमि, भूमि कटाव से प्रभावित है। असम, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा आदि राज्य भूमि-कटाव की समस्या से अत्यधिक प्रभावित हैं।

भूमि (मिट्टी) कटाव के प्रकार :

1. **धरातलीय या परतदार कटाव-** तेज मूसलाधार वर्षा के कारण जब धरातल का ऊपरी उत्पादक भाग तेज पानी से बह जाता है, तब उसे धरातलीय या परतदार कटाव कहते हैं।
2. **कछार वाला कटाव -** नदियाँ अथवा तेज बहने वाली जल-धाराओं के द्वारा जो कटाव होता है, उसे कछार वाला कटाव कहते हैं। इसमें मिट्टी कुछ गहराई तक कट जाती है तथा भूमि सतह पर नालियाँ व गड्डे बन जाते हैं।
3. **वायु का कटाव-** तेज मरुस्थलीय हवाओं के द्वारा धरातल की सतह की उपजाऊ मिट्टी उड़ जाती है जो उड़कर अन्य स्थानों पर ऊँचे-ऊँचे मिट्टी के टीले बना देती है।

मिट्टी के कटाव के कारण :

1. तीव्र एवं मूसलाधार वर्षा। भारत में 90% वर्षा केवल 4 महीने में हो जाती है।
2. नदियों का तीव्र बहाव एवं उनमें उत्पन्न बाढ़।
3. वनों का अत्यधिक विनाश।
4. खेतों को जोतकर खुला छोड़ देना।
5. तेज हवाएँ चलना।
6. कृषि-भूमि पर पशुओं द्वारा अनियन्त्रित चराई।
7. खेतों पर मेड़ों का न होना।
8. भूमि का अत्यधिक ढालू होना।
9. पानी के निकास की उचित व्यवस्था न होना।
10. कृषि करने के दोषपूर्ण ढंग; जैसे ढालू भूमि पर सीढ़ीदार जुताई न करना, फसलों के हेर-फेर के दोषपूर्ण ढंग इत्यादि।

मृदा संरक्षण के उपाय :

1. पशुओं की अनियन्त्रित चराई पर रोक लगाई जाए।
2. जल निकासी की उचित व्यवस्था हो।
3. वनों का संरक्षण किया जाए आदि।

21. **(ब)** रेगर मृदा

(स) मध्य प्रदेश

(ब) काली मृदा बहुत महीन कणों अर्थात् मृत्तिका से बनी होती है।

(स) इनमें फॉस्फोरस की मात्रा अत्यधिक होती है।

मिशन ज्ञान
पढ़ो : जब चाहे, जहाँ चाहे, जैसे चाहे!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES